# समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जनवरी २०१२ • वर्ष ६३ • अंक १

सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार डॉ. उदयवीर शर्मा

## बंगाल में बसने वाले मारवाड़ी बंगाल के हो गये हैं : सुदीप बन्द्योपाध्याय

## समाज सुधार में सम्मेलन का योगदान सराहनीय : सौगत राय

★ मारवाड़ी महिला सम्मेलन का भव्य अधिवेशन जालना में सम्पन्न

★ ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित

*Caring for Land and People...*

# RUNGTA MINES LIMITED

*Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors*

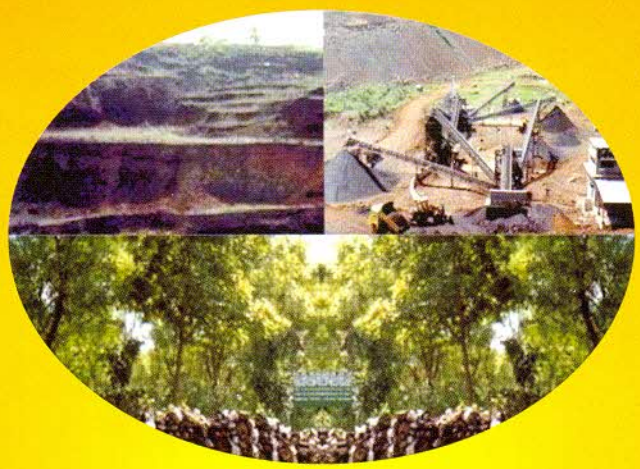

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

## CORPORATE OFFICE

*RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA*
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

## REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

## MINES DIVISION

**RUNGTA OFFICE**
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

## SPONGE IRON DIVISION

**ORISSA**
**RUNGTA OFFICE**
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

**JHARKHAND**
**RUNGTA OFFICE**
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDI
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

# समाज विकास

◆ जनवरी २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक १ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

## अनुक्रमणिका


| क्रमांक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| चिट्ठी आई है | ४ |
| **सम्पादकीय** : प्रवासी मारवाड़ी समाज एवं मातृभाषा – ***सीताराम शर्मा*** | ५ |
| **अध्यक्षीय** : ईश्वर से वार्तालाप प्रेम-सादगी के साथ – ***हरि प्रसाद कानोड़िया*** | ७ |
| बदलते जमाने में वैवाहिक संस्कार – ***संतोष सराफ*** | ९-१० |
| स्थापना दिवस समारोह की रपट | ११-१४ |
| समाज सुधार कमेटी की बैठक में विवाह समारोहों में मद्यपान रोकने का आह्वान | १५ |
| संयक्त मंत्री कैलाश तोदी को पितृशोक | १५ |
| अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन का संयुक्त आह्वान | १७ |
| राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार | १७ |
| ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित | १७ |
| पश्चिम वंग मारवाड़ी सम्मेलन ने करवायी कन्या की शादी | १९ |
| सुकुमार रायचौधरी को विवेकानन्द सेवा सम्मान / मोडिया लिपि पर कार्य | १९ |
| कवि अम्बू शर्मा लिखित राजस्थानी रामायण के छह छंद | १९ |
| परिवार में संस्कार का महत्व – ***संजय सुरेका*** | २१-२२ |
| समाज की दिशा और दशा – ***मोजीराम जैन*** | २२ |
| जालना में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का भव्य अधिवेशन | २४-२५ |
| **प्रान्तीय समाचार** – उत्तराखण्ड – स्थापना दिवस पर कंबल वितरण | २७ |
| **लघुकथा** – दो नम्बर की ईमानदारी... – ***केसरीकान्त शर्मा केसरी*** | २७ |
| **राजस्थानी व्यंग्य** – इक भोत ऊँची क्लास रो लाल बुझक्कड़ – ***नथमल केडिया*** | २८-२९ |
| समाज विकास में वर-वधू परिचय | ३० |
| **कविता** – **शिव सारदा** / SMS की दुनिया | ३१ |
| **पुस्तक समीक्षा** – चाँद से गुफ़्तगू – ***दिनेश जैन*** | ३२ |
| शादी-विवाह की रस्मों को महँगा न करें – ***खुशबू बंसल*** | ३३ |


**स्वत्वावधिकारी**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
**प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा**
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

## चिट्ठी आई है

### स्थापना दिवस शुभकामना

२५ दिसम्बर, २०११ को कोलकाता में आयोजित अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा ७७ वें स्थापना दिवस समारोह का आमंत्रण सधन्यवाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के संयोजक होने के नाते आपको इस समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

मारवाड़ी समाज का देश की प्रगति में उल्लेखनीय योगदान रहा है। देश के औद्योगिक, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक हित से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

इस प्रकार के आयोजन समाज को संगठित कर एक मंच पर लाने तथा भविष्य की रूप-रेखा तय करने में अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं।

आशा है आपके कुशल नेतृत्व में मारवाड़ी समाज द्वारा किये जा रहे विभिन्न सामाजिक कार्यों को नई दिशा तथा गति मिलेगी, साथ ही हमारा समाज देश के विकास में भागीदारी कर विकास की नई गाथा लिखने में सफल होगा।

**– संतोष रूंगटा**
चेयरमेन
रूंगटा ग्रुप ऑफ कॉलेजेस, भिलाई–रायपुर (छत्तीसगढ़)

### समाज विकास : पठनीय व सराहनीय

'समाज विकास' का सितम्बर अंक मिला। श्री सीताराम शर्मा का सम्पादकीय 'हाय, महँगाई मार गई' काफी विचारोत्तेजक है जिसमें देश की दशा और दिशा को निर्भीकता एवं निष्पक्षता के साथ उजागर किया गया है। सरकार की आर्थिक नीति से महँगाई का पारा चढ़ता ही जा रहा है और आम आदमी की थाली से दाल-रोटी गायब होती जा रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया का आलेख बहुत ही सुन्दर है जिसमें प्रेम और सादगी अपनाते हुए निष्काम कर्म करने की प्रेरणा दी गई है। मारवाड़ी समाज की गलत छवि दिखलाने वालों के विरूद्ध श्री संतोष सराफ के आलेख में व्यक्त आक्रोश बिलकुल जायज है। कवितायें भ्रष्टाचार के विरूद्ध शंखनाद करती हुई नये समाज के निर्माण का संदेश देती हैं। कुल मिलाकर अंक पठनीय, मननीय और सराहनीय है।

**– युगल किशोर चौधरी**
चनपटिया, प. चम्पारन (बिहार)

### आमरी पर एक खुला पत्र

४ जनवरी २०१२ के समाचारपत्र से पश्चिम बंग राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का बयान "राज्य में मौत का उद्योग नहीं लगने देंगे – ममता" पढ़ने को मिला। इस संदर्भ में मैं अपनी बात आपकी पत्रिका के माध्यम से समाज व बंगाल की शांतिप्रिय जनता के सामने रखने की इजजात चाहता हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपने समाज की तरफ से आमरी घटना में दुर्घटना में शिकार उन सभी लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए राज्य की माननीय मुख्यमंत्री जी के इस बयान की कड़े शब्दों में प्रतिरोध करता हूँ। दुर्घटना किसी भी समय और किसी के साथ हो सकती है। इसे आतंकवादी शब्दों से तुलना करना या अपराधी शब्दों की संज्ञा देना कहां तक उचित है? मैं मानता हूँ कि आमरी कांड में जो कुछ भी हुआ बहुत दुर्भाग्यजनक है। भोपाल गैस कांड या दिल्ली में सन् १९९७ में उपहार सिनेमा हॉल में हुई घटना भी कुछ इसी प्रकार घटी थी। क्या ये उद्योग भी इसी प्रकार "मौत के उद्योग" माने जाने चाहिए? बिजली के तार से आये दिन आग लगने एवं बड़ी संख्या में लोगों के मारे जाने की घटना हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। परन्तु हम इस बात को इंकार नहीं सकते की बिजली उद्योग को हम बंद नहीं कर सकते। इसी प्रकार बस या ट्रेन दुर्घटनाओं से लोग अच्छी तरह वाकिफ है। मैं मानता हूँ मारवाड़ी समाज का एक वर्ग पैसे की अंधी दौड़ में समाज के नैतिक मूल्यों जिसमें चिकित्सा व सेवा के क्षेत्र को उद्योग में परिवर्तित कर दिया है। समाज पैसे की दौड़ में अंधा हुए जा रहा है। समाज के कुछ अभिजात्य वर्ग पैसे के बल सभी कुछ खरीद लेना चाहते हैं। समाज को समझना होगा क जिस धन के बल पर वह राज करना चाहता है उसका हर वक्त साथ नहीं देता। लोगों को जेल में बन्द कर हम पीड़ितों की पीड़ा को कम नहीं कर सकते। घटना के समय दो दक्षिण भारतीय नर्स आमरी अस्पताल में थी जो अपने सेवा धर्म पर अपनी बलि देकर मरीजों को बचाने में अन्त तक लड़ती रही। शेष सौ से अधिक कर्मचारी और डॉक्टर उस समय किधर चले गए थे? घटनास्थल पर जितने लोग कार्यरत थे उनपर क्या कार्रवाई की जा रही हैं? राज्य में जितने गैर सरकारी अस्पताल चल रहें हैं इन सबको भी बन्द कर देना चाहिए। सरकार सरकारी अस्पतालों का क्या करेगी? यह सरकार ही निर्णय ले। समाज में काफी असंतोष व्याप्त हो चुका है। इसमें कोई दो मत नहीं है।

**– शम्भु चौधरी**
एफ.डी. ४५३/२, साल्टलेक सिटी, कोलकाता

### पत्रिका में सभी को स्थान मिलें

इस पत्र के साथ मातृभाषा - राजस्थानी शिर्षक से लेख भेज रहा हूँ। अनुभव किया है, पत्रिका में विशिष्ट वर्ग-विशिष्ट व्यक्तियों के वारे में ही अधिक सामग्री रहती हैं। अखिल भारतीय स्तर की संगठन पत्रिका हैं, सभी को स्थान मिलना चाहिए। मैं १५ वर्षों से लेख भेज रहा हूं, अब तक २ लेखों को (वह भी कुछ वर्ष पूर्व) स्थान मिला। विचार करें।

**– श्यामसुंदर टावरी**
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय टावरी परिवार
अमरावती

सम्पादकीय

# प्रवासी मारवाड़ी समाज एवं मातृभाषा

– सीताराम शर्मा

आधुनिकता से उत्प्रेरित संक्रमण ने मारवाड़ी समाज विशेषकर प्रवासी मारवाड़ी समुदाय को, अपनी लोक मूल संस्कृति से परे धकेल दिया है। इसका प्रधान लक्षण है अपनी मातृभाषा से विरक्ति और क्रमशः उसका परित्याग। यह घोर चिन्ता का विषय है। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषायी अंचल से परे प्रवासी मारवाड़ी समुदाय अब सार्वजनिक रूप से तो दूर, अपने परिवार में भी मारवाड़ी भाषा का व्यवहार नही करता। प्रवासी समाज फलस्वरूप अपनी लोक संस्कृति से विच्छन्त हो गया है। भावों का संप्रेषण लोक भाषा से ही होता है। भावों से संस्कार बनते हैं, जिनसे लोक संस्कृति जन्म लेती है, निरूपित, विकसित एवं संरक्षित होती है। अर्थात लोक भाषा ही लोक संस्कृति से जोड़ती है। लोकभाषा के तिरोहित होते चलते लोकगीत भी तिरोहित हो चले है। मारवाड़ी अंचल की कलाओं से तो प्रवासी मारवाड़ी समुदाय का विशेष परिचय हो ऐसा नही लगता है।

आवश्यकता है कि प्रवासी मारवाड़ी समाज को, अपनी भाषा – मारवाड़ी भाषा को – अपने नैतिक जीवन-व्यवहार में, अपने घर परिवारो में पूर्ववत पूर्णता से अपनाना चाहिये। मारवाड़ी समाज की मौलिकता के संरक्षण की यह प्रथम शर्त है। हमें अपने विश्वमान्य दार्शनिक भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन के इन शब्दों को स्मरण करना चाहिये कि, "हमारी कुछ उपभाषाएं करोड़ों देशवासीयों द्वारा बोली जाती है जिनकी सांस्कृतिक प्रगति केवल उनकी भाषाओं में ही हो सकती है।" मारवाड़ी भाषा के संबंध में विख्यात भाषा शास्त्री डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का यह आह्वान भी स्मरणीय है, "अपनी मातृभाषा राजस्थानी का स्थान फिर ऊँचा करों, इससे अपनी मानसिक उन्नति करो और हृदय को उद्‌भाषित करो।" हमें राजस्थानी भाषा में साहित्य सृजन और उसके प्रकाशन को भी प्रोत्साहित करना होगा। राजस्थानी भाषा में अधिकाधिक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हो एवं उन्हे हर प्रकार का संरक्षण एवं सहयोग प्रदान किया जाये। साथ-साथ मांगलिक अवसर पर अपनी लोक-कलाओं, लोक परम्पराओं को प्रोत्साहित करें। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषा को संविधान की आठवी सूची मे सम्मिलित कराने के लक्ष्य की पूर्ति भी भाषायी पुर्नजागरण से ही होगी।

मारवाड़ी सम्मेलन ने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये लगातार प्रयास किये हैं। सम्मलेन कई वर्षों से राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार के लिये विशेष रूप से सचेष्ट है। राजस्थानी सहित्यकारों को प्रोत्साहित करने हेतु सम्मेलन वार्षिक पुरस्कार देता है। गत वर्ष सम्मेलन ने राजस्थानी व्याकरण का प्रकाशन किया है। घर-घर मे राजस्थानी भाषा में पढ़ने-पढ़ाने का अवसर प्राप्त हो इसी ओर कदम बढ़ाते हुए सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' में प्रत्येक माह कुछ पृष्ठ राजस्थानी भाषा मे प्रकाशित करने का निर्णय लिया है जिसका पाठकों ने हार्दिक स्वागत किया है। 'समाज विकास' के पाठक अब राजस्थानी भाषा मे अपनी रचनाएं भेज सकते है। ●

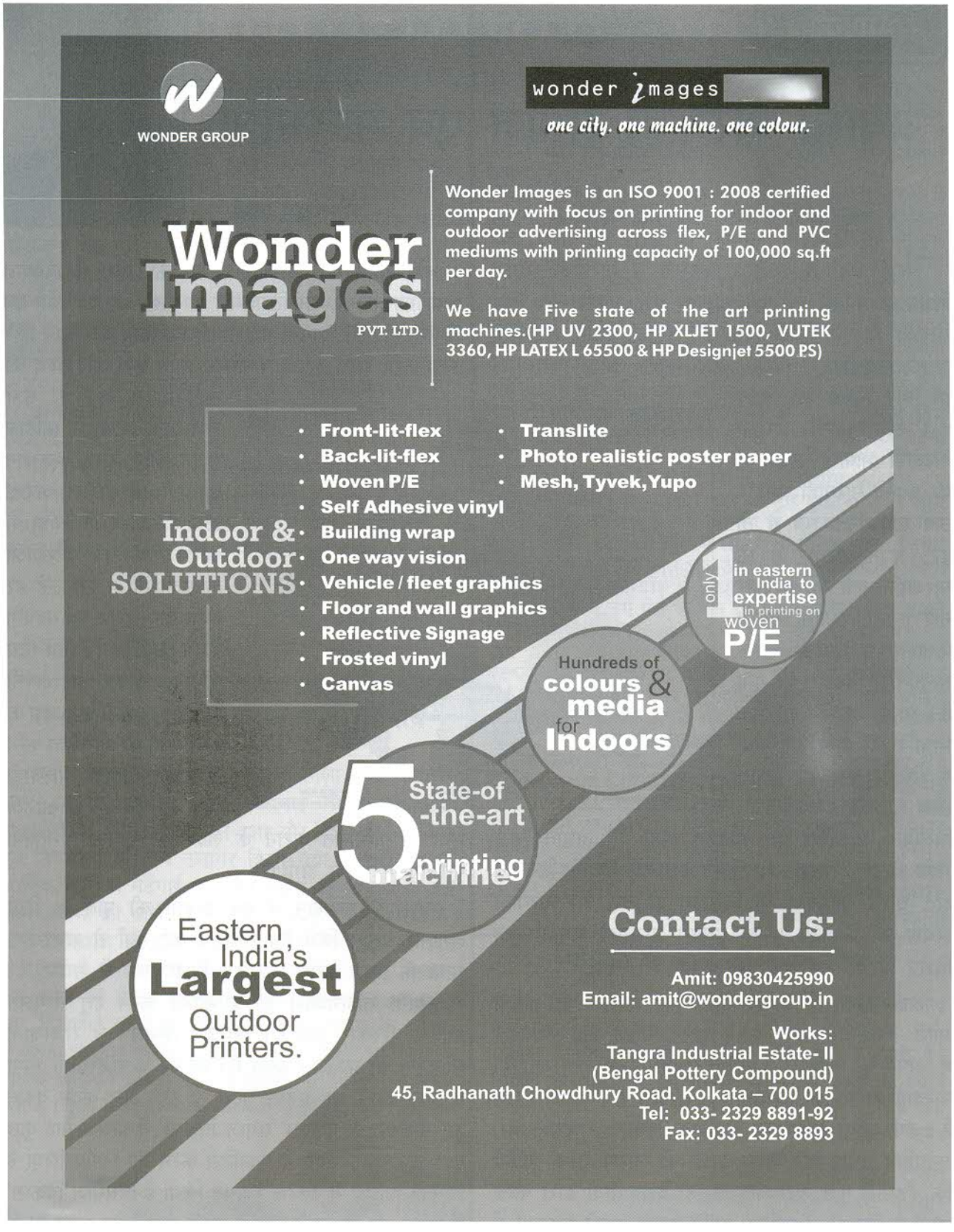
WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek,Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

अध्यक्षीय

# ईश्वर से वार्तालाप प्रेम-सादगी के साथ

– हरि प्रसाद कानोड़िया

नया साल की राम राम।

हम यदि प्रयास करें तो ईश्वर के साथ रह सकते है और उनसे बात कर सकते हैं। हमे संत होने की जरूरत नहीं है। गृहस्थ जीवन, सादगी, भागवत प्रेम, सेवा उच्चतम है। भगवान श्री कृष्ण ने अपने मित्र, शिष्य अर्जुन से कहें है कि त्याग का अर्थ होता है, अपनी इच्छा को त्यागना। कर्म के फल की कामना नही करना है। महाराज जनक राजा थे, उनके पास राज्य की सारी सुख सुवीधा थी। फिर भी वे एक योगी की तरह जीवन यापन करते थे।

**ब्रह्मण्य आधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।**
**लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रम् हवाम्भसा।।१०।।** अध्याय ५

अर्थात् जो व्यक्ति कर्मफलों को परमेश्वर को समर्पित करके आसक्तिरहित होकर अपना कर्म करता है, वह पापकर्मो से उसी प्रकार अप्रभवित रहता है, जिस प्रकार कमलपत्र जलाशय के कीचड़ जल से। एक कर्म योगी को कर्म करने में खुशी मिलती है, क्योकि वह फल की आशा नहीं करता है। अपना काम निरंतर करते रहता है। जो व्यक्ति फल की इच्छा लेकर कार्य करते है, वे स्वार्थी और मतलबी हो जाते है।

**युक्त कर्मफल त्यक्त्वा शान्तिम् आप्नोति नैष्ठिकीम्।**
**अयुकनः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।।१२।।** अध्याय ५

यानि निश्चल भक्ति शान्ति प्रदान करती है। जो व्यक्ति कर्म का फल चाहते है, वे बंध जाते है और वह व्यक्ति त्यागी नहीं होते है। ईश्वर में प्रेम भावना नही रहती है। सच्चे भक्त कर्म करते है, वे फल की इच्छा नही करते है। वे भगवान को चाहते है, उनको पाना चाहते है, उनसे बात करना चाहते है और उनके साथ रहना चाहते है।

St. Augustine कहते है कि हम ईश्वर के पास अपने पैर पे चल कर नहीं जाते है, बल्कि आत्मा के स्नेह से ईश्वर के पास जाते है। जिस तरह सिद्धार्थ शाश्वत सत्य और परम खुशी की खोज में सब कुछ त्याग कर भगवान बुध बनें उसी प्रकार आज भी प्रगति व विकास के लिए खोज जारी है। वह व्यक्ति जो भगवान को पा चुकें है और उनसे बात कर चुकें हैं, उस व्यक्ति के लिए उनकी खोज समाप्त हो गयी है।

बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि भगवान ने इन्सान को अपने रूप मे ही बनाया है। Jesus ने त्रिमूर्ति की बात कही है। जिसके तीन अंश परमात्मा, पिता और पुत्र हैं। ईश्वर चेतना बुद्धि, सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी है। हिन्दुओं के वेद में जाता है, भगवान अकेले थे और वह अकेलापन महसूस कर रहे थे। तब भगवान ने अपनी इच्छाशक्ति से सृष्टि की रचना की। ईश्वर अपनी सृष्टि का आनंद लेना चाहते है। ईश्वर महान ऊर्जा अथवा ब्रह्मांडीय चेतना के माध्यम से खेलते है। चेतना का अर्थ है, खुद के बारे मे जागरूक होना। विभिन्न धर्म के शास्त्रों में लिखा है कि लोगों ने भगवान से वार्तालाप की है और उनके साथ रहे है। भगवान व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत रूप में है। वे प्रकट होते है विभिन्न रूपों में, प्रकाश के रूप में, और वह कंपन के माध्यम से बोलते हैं। निर्माण के समय दुनिया शून्य थी। तभी वहां कंपन हुआ और एक आवाज आई "ओम, आमीन, अमीन"।

भगवान ने मानव और शेर शरीर का रूप धारण कर अफने भक्त प्रह्लाद कि रक्षा की। भगवान विष्णु ने अपने भक्त ध्रुव को आशीर्वाद दिये। संत व्यास जी ने भगवान गणेश जी को वेद लिखाये थे। भगवान शिव जो त्रिदेवों के एक अंश है, उन्होने अपने भक्तों को आशीर्वाद दिया है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार हिन्दु धर्म ही सारे धर्मों की जननी है। संत तुलसी दास जी कहते है, ईश्वर साकार और निराकार है। मोहम्मद पैगंबर, अहुरा मज्दा, गौतम बुद्ध, चैतन्य महाप्रभु, मीरा, कबीर, सूरदास, परमहंस, योगदानंदा, बामाखापा, राधाकृष्णा ने अपने अपने प्रिय भगवान के साथ बात की है और साथ रहे हैं। परमहंस योगानंद अपनी आत्मकथा मे लिखें है कि वे कई अवसरों पर भगवान से बात किये है। हिन्दुशास्त्र के अनुसार बतलाया गया है कि अगर एक दिन एक रात बिना किसी रुकावट के भगवान को याद करें तो वह जवाब देंगे। स्वामी विवेकानंद अत्यंत गरीबी की अवस्था में थे। उनके पास अपने परिवार के लिये भोजन भी नहीं था। रामकृष्ण के कहने पर स्वामी विवेकानंद मां काली के पास गए। वे मां से कुछ मांग नहीं सके। वे बोले – हे मां मुझे अपना प्यार, ज्ञान और विवेचन शक्ति दो। मां काली ने उन्हें ये सब कुछ दिया। रामकृष्ण कहते है, यदि कोई इन्सान भगवान का नाम ले तो उसका शरीर मन और सब कुछ शून्य हो जाता है। ●

*With Best Compliments From :-*

# M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

**1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211**
**KOLKATA -700 069**

*Tele No. : 2210-3480, 2210-3485*
*Fax No. : 2231-9221*
*e-mail : roadcargo@vsnl.net*

**BRANCHES & ASSOCIATES AT**

*DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM*

# बदलते जमाने में वैवाहिक संस्कार

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

सृष्टि की रचना के समय से ही सामाजिक व्यवस्था को सुचारू ढंग से संचालित करने की कोशिशें जारी हैं। सामाजिक सुधार का सिलसिला किसी न किसी रूप में, किसी न किसी दृष्टि से आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। वर्ण व्यवस्था भी इन्हीं कोशिशों का एक हिस्सा है। ऊंच-नीच, जाति-वर्ग, गरीब-अमीर और छूत-अछूत जैसी बातें, चर्चाएं लम्बे समय से चलती आ रही हैं। कमोबेश आज के दौर में भी इस तरह की चर्चाएं कभी-कभार सुनने को मिल जाया करती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि सामाजिक संरचना, व्यवस्था और सामाजिक संचालन को लेकर बुनियादी तौर पर कोशिशों का सिलसिला उत्तरोत्तर जारी है। यह बात अलग है कि इन्हीं कोशिशों में से कुछ बातों पर समय-समय पर सवालिया निशान लगता रहा है। सामाजिक चिंतन करने वाले लोग प्रश्नचिन्ह खड़ा करते रहे हैं। आज का समाज बिल्कुल बदला हुआ है, जिस पर आर्थिक और औद्योगिक तरक्की का साफ तौर पर असर भी दिख रहा है। आज के समय में हर चीज पैसे से जोड़ी जाती है। कहा यह भी जाता है कि जब-जब समाज में आर्थिक तरक्की का सिलसिला तेज हुआ, समाज को बदलाव भी देखने पड़े हैं। हमारा समाज शैक्षिक, बौद्धिक, आर्थिक दृष्टि से निश्चित रूप से काफी उन्नत हुआ है। खासकर बौद्धिक स्तर बढ़ने की वजह से सोच-विचार में खुलापन आया है। कम्प्यूटर और इंटरनेट की सुविधाएं विकसित होने से भी समाज का समग्र चेहरा बदला है। जानकारियों की भरमार है, सूचनाएं सहज हो गई हैं। सब कुछ सबकी नजरों के सामने आ गया है। इस तरह से आज के युग में जात, धर्म, वर्ग, मजहब की संकुचित चिंतन धारा से काफी हद तक निकल रहे हैं, निकल चुके हैं या निकलने की कोशिश कर रहे हैं। यह एक अच्छी बात भी है। एक और जब हम चन्द्रलोक में घर बनाने का सपना संजो रहे हैं तो दूसरी ओर संकुचित विचाराधाराओं के जाल में फंसे नहीं रह सकते। पिछले कुछ सालों में समाज में काफी खुलापन देखा जा रहा है। खुलेपन का ही नतीजा है कि लोगों को विचारों की आजादी, अपने भविष्य को संवारने की आजादी तथा अपने भविष्य का जीवनसाथी चुनने की आजादी मिल गई है। वैवाहिक संस्कारों का सनातन धर्म में अत्यन्त महत्व है। समाज आज भी विवाह संस्कार को पवित्र भावना से ग्रहण करता है। पिछले कुछ वर्षों से समाज में प्रेम विवारों का चलन काफी बढ़ा है। युवा पीढ़ी के लोग आपस में एक-दूसरे को परख कर अपना जीवन साथी तय कर लेते हैं, जिन्हें प्रेम विवाह कहा जाता है। माता-पिता या अभिभावक की सहमति के बिना होने वाले विवाहों को अक्सर प्रेम विवाहों की संज्ञा दी जाती है। यह बात दीगर है कि जब बेटा-बेटी एक-दूसरे से प्रेम करते हुए विवाह करने का निश्चय कर लेते हैं तो फिर चाहते न चाहते हुए भी माँ-बाप को अपनी मुहर लगानी पड़ती है। लेकिन इतना तो सच है कि आज भी कोई भी माँ-बाप मन से कभी भी ऐसा नहीं चाहता कि उसकी बेटी या बेटा अपनी मर्जी से प्रेम-विवाह कर ले। हाँ, बेटा-बेटी को अपना जीवन साथी अपनी पसंद का चुनने का हक होना चाहिए, मौका मिलना चाहिए। इस तरह की सोच निश्चित रूप से समाज में बड़ी तेजी से पनप रही है। यही वजह है कि शादी के पूर्व अब लोग बेटा-बेटी से कहने लगे हैं कि वे खुद एक बार देख लें, समझ लें, परख लें। एक समुदाय के लोग दूसरे समुदाय के लोगों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करें, जाति, वर्ग, धर्म और मजहब जैसी संकुचित बातें छोड़ दें। इस तरह की बातें बहुत सारे लोग समाज में कहते हुए मिल जाएंगे। लेकिन वह हर बात व्याहारिक दृष्टि से कसौट पर हमेशा खरी नहीं उतरती, जो कहने में, बोलने में, सुनने में अच्छी लगती है। समाज में देखा जा रहा है कि एक जाति के लोग दूसरे जाति के लोगों के साथ वैवाहिक संबंध बना रहे हैं। धर्म और मजहब की दीवारें भी विवाह के मामलों में टूट रही हैं, बंधन और सीमाएं टूटती हुई दिख रही हैं। लेकिन क्या हमने कभी, हमारे समाज ने कभी इस तरह के वैवाहिक संबंधों पर गहराई से गौर किया है। किसी दूसरे प्रांत की किसी दूसरी जाति-समुदाय की बेटी के साथ संबंध करने से क्या व्यवहारिक दृष्टि से दिक्कतें नहीं आ रही हैं? उदाहरण के तौर पर अगर

कोई लड़की बाहर की रहने वाली है और उसकी शादी राजस्थान के किसी लड़के के साथ कर दी जाए तो क्या उस लड़की को राजस्थान के सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में तालमेल बैठाना सहज होगा? दरअसल समाज को अपनी कथनी और करनी के बीच के अन्तर को समझना होगा। सामाजिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश, रहन-सहन, खान-पान, पहनावा-ओढ़ावा, बोलचाल, पारिवारिक परंपराएं और संस्कार क्या मिल पाएंगे? क्या इस तरह की परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित करना कठिन नहीं होगा? अब वक्त आ गया है जबकि समाज को इन बिन्दुओं पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। किसी दूसरे समुदाय की लड़की जब घर में आती है तो चाहते हुए भी उसे परिवार के माहौल में तालमेल बैठाने में दक्कतें होती हैं। यह एक व्यवहारिक अड़चन सामने दिख रही है, जिसका समाधान खोजना होगा। सिर्फ यह कहने से कि दुनिया बदल चुकी है, जमाना बड़ी तेजी से बदल रहा है, शिक्षा का प्रचार-प्रसार काफी हो चुका है, पढ़े-लिखे समाज में लोगों की सोच बदल चुकी है, इसलिए अब जाति-धर्म, समुदाय और वर्ग का महत्व नहीं रह गया है, काम नहीं चलने वाला है। भविष्य में क्या होगा, आने वाले २५-३० वर्षों में समाज की क्या सूरत बनेगी, किस तरह का सामाजिक ढांचा होगा और किस तरह की सामाजिक सोच पनपेगी, अभी कहना बहुत मुश्किल है। आज जो हो रहा है, दिख रहा है, सोचने-समझने को मिल रहा है, उसके मुताबिक यह कहा जा सकता है कि अपने समाज, समुदाय और जाति में ही वैवाहिक संबंध करने से अच्छा रहेगा। ऐसा करने से एक ही परिवेश, एक ही माहौल और एक जैसी संस्कृति-परंपराएं मिलती हैं, जहां सामंजस्य स्थापित करने में सहूलियत होती है। ●

## ॐ आभार ॐ

*जीवन मरण परण जग साखी। बिधि पूरब रचना रचि राखी।।*
*बिधनी रचित नियत संसारा। जो आवत सोइ जावन हारा।।*

पं. ताऊ शेखावाटी कृत **श्री खाटू श्याम चरित** की इन चौपाइयों में वर्णित अटल सत्य को स्वीकार करते हुए सूचनार्थ निवेदन है कि हमारे यहां

## जगत ताई

### श्रीमती ताई शेखावाटण

**(धर्मपत्नी - पं. ताऊ शेखावाटी)**

का आकस्मिक निधन **दिनांक १७ नवम्बर २०११ (शनिवार)** को हो गया है। हम देश-विदेश में बसे हमारे उन सभी स्वजन एवं इष्ट-मित्रों का आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने विषाद की इस घड़ी में हमें स्वयं उपस्थित होकर अथवा फोन या लिखित सांत्वना-संदेश भिजवाकर ढाढ़स बंधवाया है। हम उन सभी सामाजिक संस्थाओं, साहित्य अकादमियों, पत्र-पत्रिकाओं आदि का भी सहृदय आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने उस ब्रह्मलीन आत्मा की शांति हेतु शोक सभाएं आयोजित कर अथवा समाचार प्रकाशित कर हमे अपने अपनत्व से सराबोर किया है।

विनीत

**चंद्रदतः** (पुत्र) **सरिता, ममता** (पुत्रवधू)
**विष्णुदतः** (दामाद) **हेमलता** (पुत्री) **आदित्य, अनुभव** (नाती)
**सांवरमल, गोपीराम, रंजन, पूरनमल, बजरंग,** (देवर)
**चेतन, प्रथम, कुनिका, अंशुल, अनुज** (पौत्र-पौत्रियां) एवं
समस्त **मीषण** परिवार गांव - **रामगढ़ शेखावाटी** वाले

संपर्क -
**ताऊ शेखावाटी**
द्वारिकाकुंज, ३२, जवाहर नगर,
सवाई माधोपुर (राज.)
मो. ०९४१४२ ७०३३६

# स्थापना दिवस समारोह

## बंगाल में बसनेवाले मारवाड़ी बंगाल के हो गये है : सुदीप बन्दोपाध्याय

## समाज सुधार में सम्मेलन का योगदान सराहनीय : सौगत राय

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७७वें स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन केंद्रीय राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री सुदीप बंद्योपाध्याय ने दीप प्रज्ज्वलित कर दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि बंगाल में बसने वाले मारवाड़ी बंगाल के हो गए हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने मारवाड़ियों को धन, बुद्धि, व प्रतिष्ठा दी है और वे इसका सदुपयोग भी कर रहे हैं। उन्होंने जागृत समाज से बंगाल के विकास में सहयोग करने एवं गंगा को प्रदूषण मुक्त कराने में सहभागित निभाने का आह्वान किया।

स्थानीय विद्यामंदिर सभागार में आयोजित स्थापना दिवस समारोह में श्री गणेश जी एवं सम्मेलन के संस्थापक स्वर्गीय रायबहादुर रामदेव चोखानी की तस्वीर पर माल्यार्पण के पश्चात् अपने स्वागत भाषण में सम्मेलन सभापति श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने सम्मेलन के आदर्श वाक्य "म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति" का उद्घोष करते हुए कहा कि हमें अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त संस्कारों को संचित करते हुए आगे बढ़ना

**बाये से दाये – पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ, केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री सुदीप बन्दोपाध्याय एवं श्री सौगत राय तथा सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार।**

*सभा को सम्बोधित करते केन्द्रीय राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री सुदीप बन्दोपाध्याय।*

*सभा को सम्बोधित करते केन्द्रीय राज्य शहरी विकास मंत्री श्री सौगत राय।*

*स्थापना दिवस पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।*

है। समाज सुधार के जो भी कार्यक्रम है वो युवा एवं मातृशक्ति के सहयोग से ही संभव है। लेकिन इसके लिए बुजुर्गो के अनुभवशाली परामर्श की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समाज के मनीषियों ने जिस लक्ष्य को सामने रखकर सम्मेलन की स्थापना की थी उसे प्राप्त करने के लिए सम्मेलन की मजबूती सबसे जरूरी है। समर्थ संगठन से ही समर्थ समाज का निर्माण होता है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने सचिव का प्रतिवेदन पढ़ा एवं सम्मेलन द्वारा किये जा रहे कार्यो की जानकारी दी।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि समाज को स्वयं में ताकत पैदा करनी होगी। किंतु हम सिर्फ धन के बल पर ही सबल नहीं हो सकते बल्कि हमें राजनैतिक स्तर पर भी सक्रिय होना होगा और तभी हम विपरीत परिस्थितियों का सामना भी सक्षमता से कर सकेंगे। श्री शर्मा ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन एकमात्र ऐसी संस्था है जो अपनी खामियों की चर्चा कर उसे दूर करने का प्रयास करती है। स्वयं में सुधार लाने के लिए चिंतन मनन करता है। उच्च शिक्षा कोष के संबंध में उन्होंने बताया कि समाज के मेधावी छात्र-छात्रा जो धन के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, वैसे छात्रों को इस कोष से आर्थिक सहयोग दिया जाता है।

मुख्य अतिथि के रूप में अपने

*स्थापना दिवस समारोह पर अपने विचार व्यक्त करते सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।*

*सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार डॉ. उदयवीर शर्मा अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए।*

*उच्च शिक्षा हेतु सुश्री पायल गांगुली को सहायता राशि का चेक प्रदान करते उच्च शिक्षा कमेटी के चेयरमैन श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, साथ में है केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री सौगत राय, श्री सुदीप बन्दोपाध्याय व अन्य।*

विचार व्यक्त करते हुए केंद्रीय राज्य शहरी विकास मंत्री श्री सौगत राय ने कहा कि सम्मेलन अपने स्थापना काल से ही दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, लड़कियों की शिक्षा, विधवा विवाह आदि अनेकानेक सामाजिक बुराईयों को रोकने के लिए कृत संकल्पित है। लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए सम्मेलन सराहनीय कार्य कर रहा है। इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

समारोह में मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. उदयवीर शर्मा को सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके तहत डॉ. शर्मा को शॉल, पाग, श्रीफल एवं मानपत्र के साथ २१ हजार रुपयों का एक चेक सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया एवं पश्चिम बंग प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने भेंट किया। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा हेतु सुश्री पायल गांगुली को उच्च शिक्षा कमेटी के चेयरमैन श्री प्रहलाद राय अग्रवाल ने सहायता राशि का एक चेक प्रदान किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि समाज के समक्ष आज अनेकों चुनौतियां है जिसका हमें मिलकर सामना करना होगा। संचालन किया संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका ने। अंत में श्री विनोद वर्मा के नेतृत्व में एक भक्तिमय नाटक "मीरा की अमर कहानी" का मंचन हुआ।•

## सचिव का प्रतिवेदन

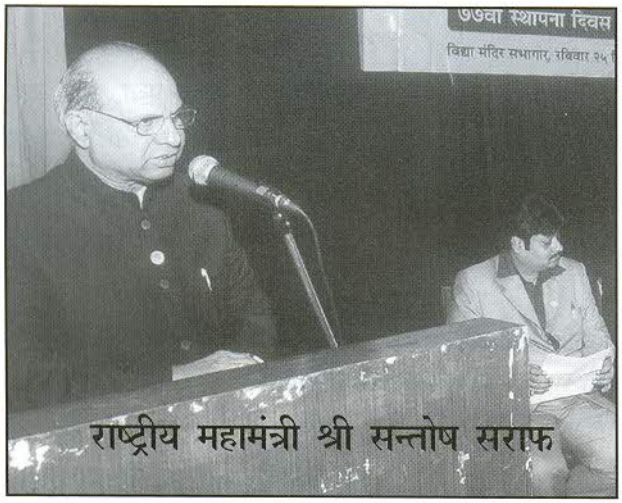


अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७७ वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आप सभी का हार्दिक स्वागत। २५ दिसम्बर १९३५ में समाज के मनीषियों ने प्रवासी मारवाड़ी समाज को आपस में जोड़ने, समाज से कुरीतियों को हटाने, समाज सुधार, राष्ट्र सेवा आदि के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की थी। अपने स्थापना काल से ही सम्मेलन पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, दहेज प्रथा, बालिका शिक्षा जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन छेड़ता रहा है। सम्मेलन की गतिविधियाँ मात्र यहीं तक सीमित नहीं वरन् आग से बेघर परिवार, ठंड़ से ठिठुरते व्यक्ति, भूकम्प, अकाल, सुनामी तथा अन्य प्राकृतिक विपदाओं के समय सम्मेलन ने लोगों की सेवा की है।

७७ वर्ष की अपनी अविराम यात्रा में सम्मेलन ने सामाजिक चेतना, संगठन, समरसता, साहित्य और संस्कृति, शिक्षा के प्रचार-प्रसार, सेवा कार्य के क्षेत्र में महती भूमिका निभायी है। महानगर से लेकर दूर-दराज के ग्राम तक जब कभी भी समाज पर आपत्ति-विपत्ति आयी है, सम्मेलन ने सदैव सहायता का हाथ बढ़ाया है। समाज और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास इस संस्था का मुख्य लक्ष्य है।

महात्मा गाँधीजी के विदेशी वस्त्र जलाओ आंदोलन, करो या मरो आन्दोलन आदि में सम्मेलन के सभी पदाधिकारी सक्रिय थे, जिसमें कइयों को जेल की सजा भी काटनी पड़ी थी।

मजबूत संगठन के बिना कुछ भी संभव नहीं है। हमें अपनी जड़ों को मजबूत करने हेतु नगर, जिला, प्रांतीय शाखाओं को और संगठित, शक्तिशाली करना है। इस समय सम्मेलन की कुल १४ प्रांतों में शाखाएँ हैं।

राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार राजस्थानी भाषा के किसी लेखक को साहित्यिक अवदान के लिए प्रदान किया जाता है।

कोलकाता के अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन का निर्माण कार्य जल्द ही शुरू किया जायेगा। म्यूटेशन का काम पूरा किया जा चुका है।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे समाज के मेधावी छात्रों को आर्थिक अनुदान देने के लिए उच्च शिक्षा कोष विगत वर्ष में गठित की जा चुकी है। इस कोष के लिए लगभग २ करोड़ की राशि का संग्रह किया जा चुका है, ५ करोड़ की राशि संग्रह करने का लक्ष्य रखा गया है।

हमें यह कहते हुए अत्यंत ही दुःख हो रहा है कि सम्मेलन के दो स्तम्भ पुरुष श्री नन्दकिशोर जालान और श्री हनुमान प्रसाद सरावगी का निधन इस वर्ष हो गया। दोनों व्यक्ति के निधन से जो रिक्त स्थान पैदा हुआ है उसे भर पाना संभव नहीं। ●

विनोद वर्मा निर्देशित भक्ति नाटक मीरा की अमर कहानी के दृश्य

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

## समाज सुधार कमेटी की बैठक में

# विवाह समारोहों में मद्यपान रोकने का आह्वान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की समाज सुधार कमेटी की बैठक ११ जनवरी २०१२ को ७, अलीपुर एवेन्यू में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कमेटी के अध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर सराफ ने की।

अपने वक्तव्य में डॉ. सराफ ने कहा कि शादी में शरीक होने के लिए महंगे आमंत्रण कार्ड भेजने का सिलसिला शुरू हो चुका है। सादगीपूर्ण तरीके से विवाह समारोह आयोजित करने का आग्रह समाज से किस तरह किया जाए, इस पर विचार करना जरूरी है। समाज में विवाह समारोह के दौरान मद्यपान करने की जो परिपाटी चली है, वह दुःखद है। इस तरह की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए सम्मेलन एक अपील पत्र जारी करने पर विचार करे।

सम्मेलन सभापति श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने कहा कि अपने रिश्तेदारों द्वारा शादी के दौरान जो बेवजह खर्च की जाती है उसे रोकने में दुविधाजनक स्थिति आ जाती है। अपने परिवार, कुटुम्ब में हो रही खर्चीली शादी किस तरह रूके इस पर भी सदस्यगण विचार करें। आगामी दिनों में महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन तथा केन्द्रीय सम्मेलन को लेकर फिजुलखर्ची, मद्यपान आदि पर प्रतिबन्ध किस तरह लगाया जाए, इस विषय पर एक संयुक्त बैठक बुलाने की योजना है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथालिया ने सुझाव देते हुए कहा कि महंगे कार्ड बनवाना महज भौंडापन है।

श्री ओम लडिया ने कहा कि महंगे कार्ड नहीं बनवाने की आलोचना से समाज पर कोई असर नहीं पड़ेगा। फिजुलखर्ची रोकने में महिला शक्ति के योगदान की आवश्यकता है। धार्मिक आयोजनों में जिस तरह बेवजह खर्च हो रहे हैं उसे रुकवाने पर भी विचार किया जाए।

श्री मदनलाल बामलवा ने कहा कि व्यक्ति का चरित्र रुपये की आमदनी के साथ बदलता है। महंगे कार्ड छपवाने के पीछे जो मंशा छिपी है उसे भी देखना चाहिए। समाज से यह अपील की जा सकती है कि शादी में अपनी क्षमता और जरूरत के हिसाब से खर्च करें।

श्री प्रह्लाद राय गोयनका ने सुझाव देते हुए कहा कि आज का युग तर्क प्रधान है। हमलोग दर्शन करें न कि प्रदर्शन। उन्होंने तीन प्रस्ताव रखते हुए कहा कि इन पर विचार करने की जरूरत है। मद्यपान रोकने, सामूहिक विवाह को प्रोत्साहन एवं दर्शन को प्रत्साहित करें न कि प्रदर्शन को।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सभी सदस्यों के प्रस्तावों को सुनने के बाद कहा कि समाज सुधार सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। लगभग सभी बैठकों में इस विषय पर गंभीर चर्चा होती है। अनवरत प्रयास के बाद समाज सुधार विषयक बहुत सारे काम हो चुके हैं, जो काम नहीं हुए वह कैसे हो इस पर मंथन करने की जरूरत है। समाज के उच्च वर्ग जो माणदण्ड स्थापित करेंगे, उसका अनुकरण नीचे की श्रेणी भी करेंगी। उच्च वर्ग सादगी पूर्वक विवाह समारोह करेंगे तो नीचे की श्रेणी भी वैसा कर सकती हैं। अतः समाज सुधार की प्रक्रिया समाज के ऊपरी वर्ग से शुरु हो, निचला वर्ग उसका अनुकरण करेगा। श्री शर्मा ने कहा कि शादी समारोहों में फिजुलखर्ची, दिखावा, प्रदर्शन, मद्यपान सोचनीय बात है। विवाह में जो मद्यपान की परिपाटी चली है उसे रोकने के कोई भी मान्य निर्णय हमलोग लें। मद्यपान रोकने का एक कारगर तरीका ये हो सकता है कि किसी विद्वान आचार्य से धर्म तथा मद्यपान पर लेख लिखवाकर उसे समाज हित में प्रचारित किया जाए, क्योंकि धर्म का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर है। समाज अभी भी धर्म से जुदा नहीं हुआ है। इस प्रचार के बाद भी जिनके यहाँ शादी समारोह के अवसर पर कॉकटेल पार्टी होती है उनके यहाँ विवाह समारोह में हमलोग भाग नहीं लें।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने कॉकटेल पार्टी पर गोष्ठी करवाने का सुझाव रखा।•

### संयुक्त मंत्री कैलाश तोदी को पितृशोक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी के पिता श्री श्याम सुन्दर तोदी को स्वर्गवास गत २१ दिसम्बर २०११ को हावड़ा में हो गया। सम्मेलन उनके निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

# IISD

*A Gateway to Careers*

SREI Foundation

*"Educate Morally & Technically"*
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

| | |
|---|---|
| 3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000 | 2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000 |
| 3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000 | 2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000 |

**ELIGIBILITY & SELECTION**

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

***Assistance for placement***

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

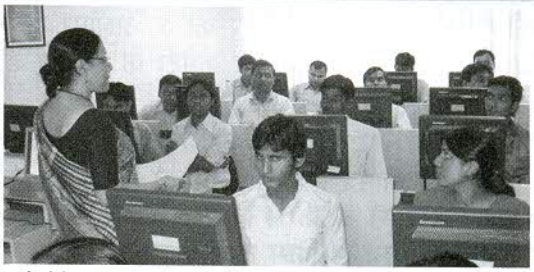

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

**Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :**

- Spoken English • Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

**Other Courses :**

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- **Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi**
- **NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview**
- **Certificate Course in Computer Applications**
- **Advanced Diploma in Financial Management**
- **Entrepreneurship Development**
- **Vocational & Technical Training**
- **Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)**
- **WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)**
- **Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)**
- **Diploma in Banking and Finance**
- **Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I**

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

## INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

**Unit - I**

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

**Unit - II**

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन का संयुक्त आह्वान

# मिलकर करेंगे समाज सुधारक काम

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी महिला सम्मेलन की बीतें माह की २८ तारीख के हुई एक संयुक्त बैठक में यह स्वीकार किया गया कि सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं समाजहित में अब एकजूट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। बैठक में तय हुआ कि दोनों संगठन राष्ट्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय स्तरों पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आपसी तालमेल बनाकर एकसाथ सेवामूलक कार्य करें। यह भी तय हुआ कि दोनों संगठन अपने स्वतंत्र रूप में एक दूसरे के पूरक बन कार्य करेंगे।

बैठक में सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री श्री संतोष सराफ, संयुक्त मंत्री श्री संजय हरलालका, महिला सम्मेलन की अध्यक्षा स्मिता चेनानी, उपाध्यक्ष शारदा लाखोटिया, सहसचिव राज कुमारी सबाल्दी, प्रांतीय अध्यक्ष श्वेता टिबड़ेवाल, प्रांतीय सचिव मंजू डोकानिया, श्रीमती विमला डोकानिया आदि कई सदस्य मौजूद थे।

दोनों संगठनों ने उक्त निर्णयों को सुचारु रूप से रूपायित करने हेतु संयुक्त रूप से यह निर्णय लिया कि दोनों संस्थाएं राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर चार-चार समन्वयकर्ताओं को आपसी तालमेल स्थापित करने हेतु मनोनीत करेंगी। अंत में आशा व्यक्त की गयी कि इस ऐतिहासिक पहल के तहत एकजूट होकर मारवाड़ी सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कुछ महत्वपूर्ण एवं कारगर भूमिका निभायी जा सकेगा।

# राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों के समापन अवसर पर गिरीश पंकज ने कहा कि छंद हमारे मस्तिष्क एवं स्मृति में सुरक्षित हो जाते है। उत्तर आधुनिकता के नाम पर लोगों के कपड़े उतारने की प्रवृति पर कटाक्ष करते हुए कहा कि नारी विमर्श सिर्फ नारी देह दर्शन तक सिमट गया है और नारी का व्यक्तित्व गौण हो गया है जो भयावय स्थिति है। इस समारोह में हिन्दी परामर्श मण्डल सदस्य योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरूण' ने कहा कि संचार क्रांति और तकनीक हिन्दी को उतरोत्तर आगे ले जाने का कार्य कर रही है। वैश्विक आर्थिक उदारीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने उत्पादों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जिस माध्यम की सर्वाधिक जरूरत है वह भाषा है और हिन्दी का जन भाषा होना ही उसकी जीवन्तता है। जिसके कारण आधुनिक संचार माध्यमों में हिन्दी का उपयोग अनिवार्य बन चुका है। उन्होंने कहा कि जापान जैसे विकसित राष्ट्र के विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्ययन का शताब्दी वर्ष मनाना हिन्दी के लिए गौरव की बात है। स्वागत उदबोधन करते हुए साहित्य अकादेमी के उपसचिव बृजेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि अकादेमी ने सभी भारतीय भाषाओं को एक सांझा मंच उपलब्ध करवाया है तथा हिन्दी को योजक के रूप में व्यवहृत कर अनुवाद के क्षेत्र में योगदान दिया है। अकादेमी अब महानगरों से निकलकर कस्बों में भी हिन्दी सेवा एवं प्रचार प्रसार करने वाली संस्थाओं के कार्यक्रमों में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रही है। जो साहित्य जगत में अभिवृद्धि का द्योतक है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यश्र श्याम महर्षि ने कहा कि साहित्य कभी अप्रासंगिक नहीं होता। जब आदमी को आदमी समझने की भावना हमारे मन में रहेगी, तब साहित्य की सदैव आवश्यकता रहेगी। महर्षि ने कहा कि कविता ही हैं जो सत्ता को भयभीत करती है और स्वतंत्रता का रास्ता दिखाती है। उदघाटन सत्र में बृजेन्द्र उदभ्रांत, योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरूण' एवं गिरीश पंकज को संस्था की ओर से 'साहित्य मार्तण्ड' उपाधि से अलंकृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन समिति के संयुक्त मंत्री रवि पुरोहित ने किया।

## ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित

**हाल ही में आयोजित प्रादेशिक सभा की बैठक में श्री ओंकरमल अग्रवाल सर्वसम्मति से पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित किये गये। उन्होने वर्त्तमान अध्यक्ष डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका से भार ग्रहण किया।**

**श्री ओंकरमल अग्रवाल इससे पूर्व राष्ट्रीय सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रहे है। पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन शीघ्र ही प्रादेशिक अधिवेशन के आयोजन बाये हाथ में ले रही है।**